आपकी खुशी आपके पास

Peace of Mind

क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवशाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी एडवरटाईज वेव, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों के साथ ''पीस ऑफ माइंड चैनल'' आपके शहर उपलब्ध है। इस चैनल को देखने व अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें -

- DTH - Service For Individuals.
- Only In Reliance BIG TV DTH

For Cable Operator

- Hardware - MPEG4 Receiver [beetle & solid Jujustu etc.]
- Setellite - Insate 4A
- Frequency - 4054
- Symbol Rate - 13230
- Polarisation - Horizontal

अधिक जानकारी के लिए नम्बर पर सम्पर्क करें:-

08014777111, 09549991111

सूचना

आप सभी भाई-बहनों की मांग पर राजयोग प्रवचन माला की पुस्तक 'राजयोग मेडिटेशन' नवीन संस्करण के साथ **भगवान कौन? की गीता का आध्यात्मिक रहस्य पुस्तक उपलब्ध**, हैप्पीनेस इंडेक्स, कथा सारिता उपलब्ध है। इसे आप ओम शांति मीडिया, शांतिवन कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

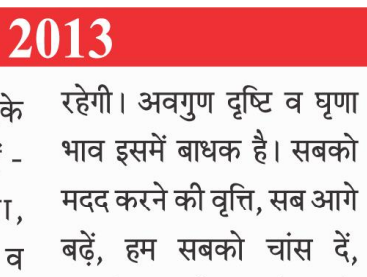

प्रश्न - बाबा हमेशा कहते हैं कि चारों सब्जेक्ट में फुल मार्क्स लेने हैं हम इसका विस्तार जानना चाहते हैं।

उत्तर -ईश्वरीय पढ़ाई हैं चार विषय, ज्ञान, राजयोग, धारणा व ईश्वरीय सेवा। प्रथम व आधारभूत विषय है ईश्वरीय ज्ञान। उसकी हर बात में सम्पूर्ण निश्चय हो, यह ज्ञान स्वयं भगवान दे रहे हैं -यह निश्चय व नशा रहे। ईश्वरीय ज्ञान की मुरली का सम्पूर्ण महत्व रहे व मुरली का सुख लें। ज्ञान-मनन द्वारा ज्ञान की सूक्ष्मता को जान लिया हो व जीवन ज्ञानयुक्त होता चले। ज्ञानी का लक्षण है मान-अपमान, हार-जीत, निन्दा-स्तुति व सुख-दुख में समान रहना। इन आधारों पर अपने ज्ञान के विषय का आकलन कर सकते हैं।

यदि आपमें फीलिंग की बीमारी है, यदि आप वही रटा रटाया ज्ञान देते हैं, यदि ज्ञान के साथ जीवन में अज्ञान की भी छाया है, यदि आप मुरली मिस करते हैं, यदि आपका निश्चय डाँवाडोल रहता है तो अंक कम हो जाएंगे। राजयोग में...आपका योग यदि प्रतिदिन आठ घण्टे है, यदि आप कर्मयोगी हैं, यदि आप स्वमानधारी हैं, यदि आपको नशा है कि भगवान मेरा है, यदि आप सेकण्ड में अशरीरी हो सकते हैं, यदि आप मन-बुद्धि को मनचाही स्थिति में स्थित कर सकते हैं तो आपके फुल अंक होंगे।धारणा में - संतुष्टता, सरलता, पवित्रता, निरहंकारिता व निर्भयता के आधार से आप अपने अंकों को जान सकते हैं। यदि आपमें क्रोध है, अहं है या लोभ-मोह है तो आपके अंक कट जाएंगे। सेवा में - निष्काम भाव, निमित्त भाव, निर्मल वाणी-युक्त सेवा फुल अंक दिलायेगी। सेवाओं से सुख देना, टकराव में न आना, दूसरों को आगे बढ़ाना व सच्चे दिल से, जो भी सेवा मिले उसे पूर्ण करना तथा अपनी सेवाओं से बड़ों को निश्चिन्त रखना -इससे सेवा में फुल मार्क्स मिलेंगे। प्रश्न -स्वर्ग के राज्याधिकारी वही बनेंगे जिनसे समस्त ब्राह्मण परिवार को स्नेह व सहयोग मिलेगा तथा जो सबके दिलों पर राज्य करेंगे। हम सबको स्नेह व सहयोग कैसे दे सकते हैं व सबके दिलों पर राज्य करना तो कठिन काम है। कई लोग तो हमारे ही दिल पर राज्य करते हैं। प्लीज सरल करके बताइये।

उत्तर -यदि हम इस दृष्टि से सबको देखते हैं कि ये हमारा परिवार है, ये सब देवकुल की महानात्माएँ हैं तो हमसे सबको प्रेम की तरंगें पहुँचती रहेगी। अवगुण दृष्टि व घृणा भाव इसमें बाधक है। सबको मदद करने की वृत्ति, सब आगे बढ़ें, हम सबको चांस दें, सबको सिखायें व आगे बढ़ायें तथा सबको वायब्रेशन्स दें। इससे हमारा सहयोग सबको प्राप्त होता रहेगा।

परन्तु यदि हम दूसरों को आगे बढ़ने देना नहीं चाहते, यदि हमें उनके आगे बढ़ने से असुरक्षा महसूस होती है तो हम सर्व के सहयोगी नहीं बन सकते। हर क्षेत्र में हम दूसरों को मदद करें व परिस्थितियों में उन्हें साथ दें। छोड़ न दें। रही बात सबके दिलों पर राज्य करने की। जिनकी स्थिति महान है, जो नम्रचित्त हैं, जो संतुष्ट हैं व स्वमानधारी हैं। जो सबको सुख देते हैं व जिनकी वाणी शीतल है वे ही दूसरों के दिलों में बसते हैं। क्योंकि जिसको सब मन से अपना राजा स्वीकार करेंगे वही राजा बनेंगे, इसमें यहाँ के पद पोजीशन का महत्व नहीं है।

प्रश्न -मुझसे मनन बिल्कुल नहीं होता। मेरी बुद्धि चलती ही नहीं। पर जबसे मुरली में सुना कि जो मनन नहीं करते व अनहैल्दी (बीमार) हैं तो मुझे तीव्र इच्छा हुई कि मैं भी मनन करना सीखूं। कृपया विधि बतायें।

उत्तर -मनन शक्ति तो मन की नेचुरल शक्ति है, मनन सभी करते हैं। यदि आपसे कोई बुरा व्यवहार कर जाए तो क्या सारा ही दिन आपका मनन नहीं चलता रहता? कोई सीन टी.वी. पर आप देख लें या किसी नेता के भ्रष्टाचार का समाचार सुन लें तो क्या मनन नहीं होता? बात यही है कि यदि बुद्धि में व्यर्थ भरा है तो व्यर्थ का मनन होगा और यदि सद्ज्ञान भरा है तो उसका मनन होगा। यदि आपको मनन सीखना है तो बुद्धि को स्वच्छ करो। पहले ही गंदगी बहुत है अब और न भरो। पहले शुरूआत करो...ज्ञान मुरली से। मुरली से पांच प्वाइंट्स रोज नोट कर लो, उन्हें सारे दिन में पांच बार पढ़ लिया करें...ज्ञान का मनन प्रारंभ हो जाएगा। घर में ही थोड़ा-थोड़ा एकांत भी लिया करें। जैसा हमने कहा मन को व्यर्थ से मुक्त रखें। न वहम हो, न परचिन्तन ...न व्यर्थ जानने की इच्छा हो। मन जितना मुक्त होगा, उतना ही श्रेष्ठ चिन्तन चलेगा। स्वमान के अभ्यास से मन की चिन्तन शक्ति जागृत होती है। इसका अभ्यास बढ़ाते चलो। इसके अतिरिक्त...आप एक अव्यक्त मुरली पढ़ें, उसका सार लिखें। कोई भी एक टॉपिक ले लें, उस पर दस प्वाइंट लिखें। इस तरह करने से मनन का अभ्यास हो जाएगा।

प्रश्न -किसी के पुरूषार्थ के सुंदर अनुभव हम सुनना चाहते हैं, ताकि हमें प्रेरणा मिले।

उत्तर -समस्याओं के हल होने का तो कम से कम एक सुंदर समाचार प्रतिदिन मिलता है जिससे यह स्पष्ट होता है कि सबसे बड़ी शक्ति ईश्वरीय शक्ति ही है। किसी माता को लम्बे समय से सिरदर्द रहता था। उसने अनुलोम विलोम प्राणायाम किया और सबेरे-शाम पांच बार अनुभव किया कि बाबा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है, उनके हाथ से पवित्र किरणें मेरे मस्तिष्क में फैल रही हैं, कुछ ही दिनों में सिरदर्द शांत हो गया। एक कुमार ने सुनाया कि वह पचास बार प्रतिदिन पाँच स्वरूपों का अभ्यास करता है, उसका जीवन आनंद से भर गया है। एक कुमारी को व्यर्थ संकल्प अति परेशान कर रहे थे। उसने प्रति घण्टे तीन बार पांच स्वरूपों का अभ्यास केवल तीन दिन तक किया। उसका मन व्यर्थ से मुक्त हो गया। जब हमने पूछा कि आप कितना दिन ये अभ्यास करना चाहेंगी तो उनका उमंग से भरा हुआ उत्तर था -'पूरा जीवन'। यह सत्य है कि बार-बार अभ्यास करने से हर मुश्किल आसान हो जाती है।

नवयुग प्रवर्तक

पेज५ का शेष

स्वरूप को पहचान कर चरित्र को ऊँचा उठाने का बल मिला। कर्म-विकर्म की गति के गुह्य रहस्य द्वारा भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी बनने की प्रेरणा मिली जिससे भ्रष्टाचार उन्मूलन में सहयोग मिला।

राजयोग की शिक्षा द्वारा पवित्रता शान्ति एवं शक्ति का संचार

पिताश्री द्वारा राजयोग की विधि की शिक्षा पाकर व्यक्तिगत जीवन में पवित्रता शान्ति एवं शक्ति का संचार हुआ जिससे मनुष्य दाम्पत्य जीवन व्यतीत करते हुए रचनात्मक कार्यो में एवं समाज सुधार तथा आत्मिक उन्नति में लग गये। राजयोग द्वारा मनुष्यों के संकल्पों में सात्विकता आई जिससे उनको मानसिक शान्ति मिली।

दिव्य गुणों की धारणा द्वारा जीवन में महानता का संचार

पिताश्री जी ने खान-पान की सात्विकता पर बल देकर तथा दिव्य गुणों की धारणा की शिक्षा देकर न केवल व्यक्तिगत जीवन में नर-नारियों में महानता प्रदान की बल्कि देश का जो अन्न-धन जिह्वा के स्वाद के कारण या फैशन और विलासिता के कारण नष्ट होता था उसे बचा लिया और आज जिस मनुष्य का आत्मा-रूपी दीपक जग चुका है वे दूसरों को जगाकर देश को फिर से पावन महान, सतोगुणी एवं सिरताज बनाने के महान कार्य में संलग्न है जिसके लिए न केवल भारतवासी माँग कर रहे थे बल्कि अन्य देश भी भारत की ओर आँख लगाये हुए थे।

नारी-जाति का पुनरोत्थान

आज तक जिस नारी जाति का लगातार तिरस्कार होता आ रहा था एवं जिनके लिए शंकराचार्य जैसे संन्यासियों ने कहा था कि- ''नारी नर्क का द्वार है', ''नारी नागिन है'' आदि-आदि, उन नारियों को ही पिताश्री जी ने अबला से सबला बनाया। पिताश्री जी ने माता-बहनों अर्थात नारी-जाति का विशेष उत्थान करके ऐसा कार्य किया जिसका उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता। जिस देश की माताएँ आध्यात्मिक कार्य में लग जाती हैं उस देश का घर-घर स्वर्ग बन जाता है। वह देश देव-भूमि बन जाता है। इस प्रकार पिताश्री जी द्वारा हुए अलौकिक कर्त्तव्यों के और भी अनेक लाभ गिनाये जा सकते हैं। आज पिताश्री साकार रूप में हमारे बीच नहीं है परन्तु अव्यक्त रूप में वे हमसे अलग भी नहीं हैं। वे अब सूक्ष्म वतन में रहते हुए नवयुग की स्थापना के कार्य को बहुत तीव्र गति के साथ पूरा करने में तत्पर हैं। यह 1969 की 18 जनवरी थी जबकि हमारे पिताश्री जी सम्पूर्णता को प्राप्त करके व्यक्त से अव्यक्त वतनवासी हुए। यह दिवस संसार के इतिहास में एक अति महत्वपूर्ण दिवस मनाया जाना चाहिए।

पिताश्री जी के सम्पूर्णता दिवस पर, उनकी पुण्य स्मृति में हम अपनी इस दृढ प्रतिज्ञा को दोहराते हैं कि पिताश्री जी ने अपनी तपस्या के बल पर ईश्वरीय ज्ञान से जो पवित्रता के अलौकिक सन्देश को हम जन-जन तक पहुँचाने के सत्कार्य को अपने सम्पूर्ण तन, मन एवं धन से करेंगे। वर्तमान समय में वे जो कार्य अव्यक्त रूप से कर रहे हैं, हम भी अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर पूरी लग्न से करेंगे।

मानव में सुसंस्कारों

पेज१ का शेष

कहा कि अगर वर्तमान राज्य सत्ता अध्यात्म के साथ हाथ मिला ले, तो निश्चय ही हम धरा पर स्वर्ग लाकर रहेंगे। मूल्य शिक्षा जागृति शोभा यात्रा का मुख्यमंत्री जी ने शिव ध्वज दिखाकर मुख्यमंत्री निवास से रवाना किया। उल्लेखनीय है कि इस शोभा यात्रा में समस्त मध्यप्रदेश से लगभग 1500 भाई-बहिनों ने भाग लिया। हाथों मे मानव मूल्यों से सम्बन्धित स्लोगन व ईश्वरीय ध्वज, नेत्रों में ईश्वरीय प्रेम लिये हुए यह रैली शांतिदूतों की तरह लग रही थी। यह शोभा यात्रा राष्ट्रीय शिक्षाविद् सम्मेलन के आयोजन स्तर मानस भवन पर मानव मूल्यों के सुमधुर गीतों के साथ मानस भवन पहुँची।